

্বু জিন্দির্কৈজ্বীর্ত্তামনীর্ত্তীন্দর্ভীনু Meaning of the name Ewam Dharma Community

🥯 ৷ জ'দ্ৰঁ'জ'দ্ৰঁ'ই'থিৱ'ৰম৷ ৷জ'দ্ৰঁ'বদুবাৰ'ইৰ'বাৰ'খিৱ'ইম৷ ৷জ'দ্ৰঁ'ৰ্ক্টবাৰ'ঘৰ্ষ'মৰ্মইৰ'অৱ৷ ৷জ'দ্ৰঁ'ৰ্ল্লৰ্ম'ঘৰিইৰ' चनिर्या । नेप्परचनिर्मिर्द्र हेद्र हेर्द्र हराजना छात्र ह्रेराय छेन् नु नास्त्र । नेचले वासे वेखन यह या। विवासे ने छेने ह्रेर जयाबिरा । रेब्रिया कुश्चर अपूर्य ही । प्र्यासिरा किया विषय हिराहिया । द्रया प्रेया स्थार हिराय हैराय के राहित है है है । हें। ह्रेंपरेन हें पहेंपरे हें दे हें पर हे ते वा वाय वाय विषय के पर हो पर हो हो हो है पर हो है पर हो है पर हो है पर हो पर है पर हो तर्यात्राश्चरत्यात्रीयात्राचियात्रयावित्रात्रयावित्रयात्र्या । रेश्चाचरत्व्य्यत्य्यात्रयात्र्यात्रयाचीश्चात्रयाचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्यात्र्याचित्रत्याचत्रत्याचित्रत्याचित्रत्याचित्रत्याच्याचित्रत्याचत्रत्याचित्रत्याचत्याचत्याच्याचित्रत्याच्यत्याचत्याचत्याचत्याच्यत्याच्यत्याचत्या तर्नेरतर्नुशःर्क्ष्यःष्परा। क्षुःषीःन्वरार्धशालुशायतेः अर्देशश्ची क्रेंशःग्रीःसुरार्धेः वर्गुन्तिः न्वा विले क्षेंरायीः से यान ॱॻॖ<mark>ी</mark> ।गाुबॱग्रीःन|बेॱॸ्ॸॱॺॱॺॱबे। ।धेःनोॱनाकेशरशुः रचःपुः नङ्गब। ।धेःनो छो बेर्स्यस्य स्थारा ।धः वेष्यः बेर्स्यः वेर्स्यः स्थारा ।धेनाः ये देशेन क्वें राम हो। देशें राम के अन्य हुरमा । छो के यू अंतरमा । भे के के हें हे छेन धो के वें । देशका वर्षे मा इसका मासुसा श्चेश विश्वाश्वर्ययाम्बिरा वर्षेरवर्षेरचन्द्रस्य र्षेन्द्रयास्यवत्रेषो वहुरचन्त्रीरचले हेन्सन्दा नेवाहेशः हरा र् तह्वा य दे हेवा ये य सर्केंदर्शे । चरुर या सर्केंदर्श सर्र रम् इति हो। सर्र रहे हे दे स्वा सि ह्ववा खेस या सुसार हो साम दे,बैरप्रह्मे, मुचा, प्राप्त प्रमूच प्रमाणियात विषय है, बैर्चरप्रह्मे काला जीका पर स्थान क्षा का का का का कि क रेअप्यर्भर्केन्द्रहेन्द्रेन्द्रेन्द्राक्षे। यहेन्प्रविधा यहेन्द्र्यात्मात्राह्मेन्द्र्यात्मात्राह्मेन्द्र्यात्मात्राह्मेन्द्र्यात्मात्राह्मेन्द्र्यात्मात्राह्मेन्द्र्यात्मेन्द्रत्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्रत्यात्मेन्द्रत्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्त्रत्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्द्र्यात्मेन्ति र्वे। । र्ह्रेनाषान्रेयायर्क्त्वान्यरुषाताः सुन्द्रम् सामाशुक्षात्रावेदार्वे । विषयान्द्रम् विमायोषी सुन्यदेशुः सुन्द्रम् । सामाशुक्षात्राविद्रम् यहवार्चे वित्रुम्भं र्राष्ट्रम्भुम्भाषाः भन्यस्य विद्यान्त्रम्भः स्त्रिम्भः स्त्रम्भः स्त्रमः स्त् तर् न्यात्रयत्वे यश्चेत्रात्रके भे तुरत्रह्या में १२ यत्वे र नु के साम्यायात्व स्तर श्चर्याय होते । के यात्रा र साम्यायात्व स्तर स्वाप्य स्वाप

श्चिम्याद्वरागावासर्केना स्वानी हें महिन वे जो निमा सर्केना मुख्या स्वीमान स्व वह्रवार्चे । यस्यविद्वेर्या, नवार्यक्षात्रा प्रस्वविद्धयम् वित्रम् विष्ट्रम् विश्वयम् अत्यः ह्रेर्यहरवहवार्युर्यवार्यास्य र्रादेखोन्धे बुरत्रह्मार्मे । तव्यात् सुगादेशाया बुरद्र केश सुदिष्टे । महमाया सुगादेश देखे। सुगादेश बुरत्रहमार्द्र । यक्षिरासूत्राचीराम्युत्रास्त्रीकार्भाम्युद्धरतह्यार्मे । देत्रुरस्युः दत्रत्यायतेर्केषात्रयस्य उत्ताप्तरेषाभागकेषास्य विषयः स्वाप्तर्यस्य स्व भुः बैरायह्या यर् रायर्था रात्त्री । किरानरारी रारा राष्ट्रिया राष्ट्रीय रात्त्रीय हात्रीय हिया. यरदेशःशुःशःकन्पतेःबुःचर्ड्वर्श्वेःग्वेश्वाद्वेशःत्वेशःन्द्वेशःन्द्वेशःन्द्वेशःन्दः। नेन्न्वाःक्रथःश्वेशःश्वेदःव बुर-नु-तह्रमाना होना निक्र से निरा क्रिया सुर्वा स्वापन स् त.पूर्ट.चोशल.ह्चोश्रात.कुरातू.वेशश.शी.मुरातपु.शवरायचंश.यी.भी.चोवेश.बीरायहंबी.शर्ट्र.टी.वी.चरायरीय.तशायी रेतुराय. कर.बी.बी.पर्वी.कथ.त्रवू.त.जा.कर.त्रवू.त.खेश.पर्ट्याशातात्त्रविश.पर्ट्याशातात्त्रवश्च श्वराष्ट्रीयां जात्त्रविश हो। प्रतावीरादेश होष्ट्रीयां बी. भैं नायुः र्ते नर्गे न्हें नर्जु त् क्षेन्। ले भैं नायर सून्य सर्म ना ले भैं क्षेन् मुन्न सुरा सावतः दर्शे क्षेन्य राज्य याया याया ले भें न्हा तीयाचिष्यमाष्ट्रप्राचिषाः सैचीयाः साम्याचिषाः मुक्तान्त्रम् स्थान्यम् सिक्तान्त्रम् सिक्तान्त्रम् सिक्तान्त्रम र्जयायायायर क्रियायाय क्रियायहूर दया ही त्रा. २००८ त्र्य ही य. ८ क्र्या ८ पा ही या



Ewam. What is Ewam? What is the meaning behind calling something Ewam? These questions have been asked many times in the Ewam Community. What follows is a presentation on the meaning of this term Ewam.

From the Vajra Garland Commentarial Tantra,

E is said to be emptiness. As for Wam, it is compassion, and the tigle emerges from the joining together of these two. This joining is supremely marvelous and pervades the 84000 divisions of Dharma.

This is the transcendent wisdom of emptiness and great compassion that can be understood to be emptiness with the essence of compassion or the inseparability of skillful means and wisdom. And as there is absolutely nothing of all the 84000 divisions of the Dharma that is not subsumed in this, it is said to pervade all. Not only this, samsara, nirvana, and the path, all phenomena contained within each of these three likewise are subsumed in this. From the *Sutra of Indra's Questions*,

All of the divisions of the 84000 sections of Dharma that can be found, their basis, their mother and father, is perfectly demonstrated in two syllables, the mother is E and the father is Wa. This is supremely renowned. The joining of the tigle of suchness, such joining is marvelous. E is explained to be the lotus, while Wam is the vajra itself. From this, the three classes of wandering beings are conceived.

In line with the above statement, if we explain this in relation to samsara, the environment's space is E while the elements of the four continents are Wa. The unity of these two represents tigle. As for the beings within the environment, mother and lotus are E while father and vajra are Wa. The merging together of the three aspects of male essence, femal ovum, and mind represents the tigle of unity (which makes Wam). In similar fashion, you should know that for women, men, the body, the mind and so forth this relates to all of them.

In relation to the path, the transcendent wisdom aspect of the completion stage is E and the method aspect of creation stage is explained as Wam. Likewise, the support in creation stage represents E while the supported deities are Wam. In relation to the supported deities, the masculine deities are Wam while the feminine are E. Like this, these syllables relate to every aspect of the path.

In relation to completion stage with characteristics, the three subtle channels and chakras are E while the elements and tigle are Wam. Arising in the illusory body of the deity is the unity of E and Wam. In relation to tummo, the Ah stroke which is in essence the feminine buddha Namshelma, is the E aspect. The Ham syllable is the nature of masculine enlightenment, Wam. The unity of Ah and Ham, the radiating and gathering back and arising of the four joys is the unity

of E and Wam. In similar fashion the rest of the six yogas as well can be explained in terms of E and Wam.

When related to the culmination of the completion stage, emptiness that is supreme in all contexts is E while immutable supreme bliss is Wam. Non-duality of bliss and emptiness is the unity of E and Wam. Also, the essence of the ground of being, primordial purity, is E. The fundamental quality of spontaneous presence is Wam. The unity of clarity and emptiness is the luminous great perfection that is the unity of E and Wam.

When related to the two kayas of the result, dharmakaya relates to E. The two form kayas are Wam. The unity of the two kayas that is the spontaneous accomplishment of the two-fold purpose is the unity of E and Wam. Like this, of all the phenomena of nirvana too, there is nothing that does not fit within E and Wam. In brief, samsara, nirvana, and the path, these three along with the ground, path, and fruition, all phenomena within these three categories, the root of all of this is embodied in E and Wam and their unity.

In particular, what is the meaning of calling the whole of our dharma community Ewam? First, it is in order to unbiasedly nurture and safeguard both monks and nuns, all of whom share the aim of spiritual practice. These trainings engage in the unity of emptiness and compassion of the Mahayana in general, and in particular engage the unity of creation and completion stage practices of the Vajrayana, and the unity of primordial purity and spontaneous presence of the Luminous Great Perfection. These practitioners' focus on gaining the direct experience of unity of the two kayas, which results from engagement in such practices. A metaphor for this relates to brewing alcohol. A fundamental condition for preparing chang is the initial boiling of grain mash, which is called preparing chang while just boiling the grain. In a similar sense, in our context, the name of the result is given to the cause.

The saffron-garbed ordained monastics, and the white-garbed practitioners with braided hair¹ of our dharma community, all of us, are under the one single name Ewam. Therefore, there is Ewam Yuloko Jetsun Ling, Ewam Sang-ngag Phurba Ling, Ewam Kusum Khandro Ling that make up Ewam Nepal. The Ewam America community consists of Ewam Magadha Garden of 1000 Buddhas, Ewam Pema Khandro Ling, Ewam Longchen Ritro, Ewam Samten Ling and so forth. Similarly there is Ewam Taiwan, Ewam Hong Kong, Ewam Japan, Ewam Bhutan, Ewam India Nupchen Namchak Monastery and so forth which came about progressively.

I, who hold the title Gochen Tulku, Namchak Sang-ngag Tenzin, wrote this down in August 8, 2004.

¹ ngakpas